पाठ -17

FS8R5Z

रानी अवंती बाई

''देश की रक्षा के लिए कमर कसो या चूड़ी पहन कर घर में बैठो। तुम्हें धर्म, ईमान की सौगंध जो इस कागज का सही पता बैरी को दो।''

ये वह शब्द थे जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजाने में प्रमुख भूमिका निभाई। वे शब्द, जिन्होंने क्रांति की ज्वाला को फैलाने में समिधा का कार्य किया। वे शब्द, जिन्होंने इतिहास रच दिया। वे शब्द, जो इतिहास में अमर हो गए। यह शब्द थे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में मध्य भारत की प्रमुख सूत्रधार वीरांगना अवंती बाई के, जिनकी अप्रतिम शौर्यगाथा आज भी हम सबको प्रेरित कर रही है।

16 अगस्त, 1831 को मनकेहनी (जिला-सिवनी, मध्य प्रदेश) के जमींदार राव जुझार सिंह के यहां पूरे उत्सव का माहौल था। बधाइयों और शुभकामनाओं के बीच मिठाइयाँ बाँटी जा रही थीं। ढोल-बाजे बज रहे थे। जुझार सिंह जी के यहां एक बहुत प्यारी सी बिटिया ने जन्म लिया था। माता-पिता बिटिया को पाकर खुशी से फूले न समा रहे थे, उनके घर 'अवंती' जो आई थी।

बालिका अवंती बाई की प्रारंभिक शिक्षा मनकेहनी गाँव में ही हुई। उसे बचपन से ही घुड़सवारी और तलवारबाजी का बहुत शौक था। लोग बालिका अवंती की घुड़सवारी और तलवारबाजी को देखते और आश्चर्यचकित हो जाते। जैसे-जैसे बालिका 'अवंती' बड़ी होती गई, उसके साहस और पराक्रम के किस्से आस-पास के क्षेत्रों में फैलने लगे।

विवाह योग्य होने पर पिता जुझार सिंह ने बेटी अवंती बाई का रिश्ता रामगढ़ के राजा लक्ष्मण सिंह के सुपुत्र राजकुमार विक्रमादित्य से कर दिया। विवाह के उपरांत जुझार सिंह की यह साहसी बिटिया रामगढ़ रियासत की कुलवधू बनी। सन् 1850 में राजा लक्ष्मण सिंह की मृत्यु हो जाने पर राजकुमार विक्रमादित्य का रामगढ़ के राजा के रूप में राजतिलक किया गया लेकिन कुछ समय बाद राजा विक्रमादित्य अस्वस्थ रहने लगे। इनके पुत्र अमान सिंह और शेर सिंह अभी बहुत छोटे थे। अतः राज्य की पूरी देखरेख का जिम्मा अवंती बाई पर ही आ गया। ऐसी विषम परिस्थिति में अवंती बाई ने पूरी योग्यता का परिचय देते हुए राजकाज को सँभाला और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा।

उस समय लार्ड डलहौजी भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का गवर्नर जनरल था। लार्ड डलहौजी के समय में साम्राज्य विस्तार का कार्य चरम पर था। अपनी 'हड़प नीति' के कारण डलहौजी तमाम राज्यों का अपने साम्राज्य में विलय कर चुका था। जब उसे राजा विक्रमादित्य की अस्वस्थता का पता चला तो उसने रामगढ़ रियासत को 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स' के अधीन कर लिया तथा रामगढ़ के राज परिवार को पेंशन दे दी। इस घटना से अवंती बाई अत्यंत व्यथित हो गईं। दुर्भाग्य से इसी दौरान मई 1857 में राजा विक्रमादित्य का स्वर्गवास हो गया और संपूर्ण जिम्मेदारियों का दायित्व अवंती बाई पर आ गया।

सन् 1857 में देश में स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बजा तो क्रांतिकारियों का संदेश रामगढ़ भी पहुँचा। रानी अवंती बाई ब्रिटिश शासन से पहले ही अपमान का घूँट पीकर बैठी हुई थीं। उन्होंने अपने आस-पास के सभी राजाओं को क्रांति का संदेश देने के लिए चिट्ठी लिखी जिसके साथ काँच की चूड़ियाँ भी थीं। चिट्ठी में संदेश था-"देश की रक्षा के लिए कमर कसो या चूड़ी पहनकर घर में बैठो"। इस पत्र का व्यापक प्रभाव पड़ा। तमाम देशभक्त राजाओं और जमींदारों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह का झंडा उठा लिया। सर्वत्र क्रांति की ज्वाला फैल गई। रानी अवंती बाई ने अपने राज्य से 'कोर्ट आॅफ वार्ड्स' के अधिकारियों को खदेड़ दिया तथा क्रांति की बागडोर अपने हाथों में ले ली।

इस समय वीरांगना रानी अवंती बाई मध्य भारत की क्रांति का प्रमुख चेहरा बन चुकी थीं। रानी के विद्रोह की सूचना से जबलपुर कमिश्नर मेजर इस्काइन आगबबूला हो गया। उसने रानी को आदेश दिया कि वह मंडला के डिप्टी कलेक्टर से मिलें। रानी ने इस आदेश को नकार दिया तथा युद्ध की तैयारियों में जुट गईं। उन्होंने रामगढ़ के किले की मरम्मत कर उसे सुदृढ़ कराया। मध्यभारत के विद्रोही नेता रानी के नेतृत्व में एकजुट हो रहे थे। रानी ने अपने साथियों के साथ हमला करके घुघरी, रामनगर, बिछिया आदि क्षेत्रों से ब्रिटिश राज का सफाया कर दिया। इसके पश्चात् रानी ने मंडला पर योजनाबद्ध तरीके से आक्रमण कर ब्रिटिश सेना को धूल चटा दी।

इस हार से मंडला का डिप्टी कमिश्नर वाडिंगटन तिलमिला गया तथा किसी भी प्रकार पराजय का बदला लेने की योजना बनाने लगा। उसने अपनी सेना को पुनर्गठित किया तथा रामगढ़ के किले पर हमला बोल दिया। ब्रिटिश सेना संख्या बल और युद्ध सामग्री में रानी की सेना से कई गुना ताकतवर थी। रानी ने इस स्थिति को भाँपकर किले से बाहर निकलकर देवहार गढ़ पहाड़ियों की ओर प्रस्थान किया। रामगढ़ किले को बुरी तरह ध्वस्त करने के बाद अंग्रेज सेना रानी को खोजते हुए देवहार गढ़ की पहाड़ियों की ओर बढ़ चली। अंग्रेजों ने रानी के पास आत्मसमर्पण का संदेश भिजवाया। रानी ने दृढ़तापूर्वक ललकारते हुए कहा-"मुझे यह संदेश अस्वीकार है। मैं युद्ध भूमि में लड़ते-लड़ते अपने प्राण दे दूँगी लेकिन अंग्रेजांे के आगे नहीं झुकूँगी।"

रानी के उत्तर से तिलमिलाए वाडिंगटन ने रानी को चारों ओर से घेर कर धावा बोल दिया। कई दिन तक रानी और उनकी जाँबाज सेना अंग्रेजों को लोहे के चने चबवाती रही पर संख्या बल और युद्ध सामग्री कम होने के कारण धीरे-धीरे रानी अकेली पड़ती गईं। युद्ध के दौरान रानी के बाएँ हाथ में गोली लगी और उनकी बंदूक छूटकर नीचे गिर गई। निहत्थी रानी पर अंग्रेज चारों ओर से टूट पड़े। अपने आपको चारों ओर से घिरता देख वीरांगना अवंती बाई ने तलवार लेकर यह कहते हुए अपने सीने में उतार ली-"हमारी रानी दुर्गावती ने जीते-जी बैरी के हाथ से न छुए जाने का प्रण लिया था, इसे न भूलना।"

मृत्यु शय्या पर लेटते हुए इस महान वीरांगना ने अंग्रेज अफसर से कहा-"ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को मंैने ही विद्रोह के लिए उकसाया है। प्रजा बिल्कुल निर्दोष है। उसे पीड़ित मत करना।" ऐसा कहकर वीरांगना अवंती बाई ने हज़ारों लोगों को अंग्रेजों के अमानवीय व्यवहार और फाँसी से बचा लिया।

धन्य है यह वीरांगना, जिसने एक अतुलनीय उदाहरण प्रस्तुत कर 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में निरंतर लड़ते हुए 20 मार्च, 1858 को अपने प्राणों की आहुति दे दी। इनका जीवन और उज्ज्वल चरित्र हमें सदैव राष्ट्र निर्माण, शौर्य, बलिदान और देशभक्ति की प्रेरणा देता रहेगा।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. अवंती के जन्म पर उनके पिता राव जुझार सिंह ने किस प्रकार खुशियाँ मनाईं ?

2. अवंती बाई का विवाह कब और किसके साथ हुआ ?

3. अवंती बाई ने सन् 1857 में स्वतंत्रता संग्राम के समय आस-पास के राजाओं को क्या संदेश भेजा ?

4. रानी अवंती बाई ने अंग्रेजों के आत्मसमर्पण के संदेश को अस्वीकार कर दिया। इससे रानी की किस विशेषता का पता चलता है ?